एवरेस्ट की चढ़ाई का व्यापार

संध्या रायचौधरी

दुनिया के सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट पर पहुंचना रोमांचक और साहसिक है लेकिन बाज़ारवाद ने इस यात्रा के मायने ही बदल दिए हैं। आज यह शिखर कुछ लोगों के लिए सैर-सपाटे का केंद्र बन गया है। इसके चलते यहां इतना कचरा जमा हो गया है जो यहां के पर्यावरण को गंभीर नुकसान पहुंच रहा है। लगातार पिघलते ग्लेशियर और भूकंप के झटकों से इस पर्वत पर खतरे के बादल मंडराने लगे हैं।

नेहरू ने हिमालय के बारे में कहा था - 'किसी बेहद सुंदर स्त्री की तरह हिमालय भी सुंदर है। वासना और कामना से परे इसकी नदियां, घाटियां, झीलें और पेड़ों का सौंदर्य स्त्री सुलभ है तो इसका दूसरा पहलु पुरुषोचित है। मज़बूत, निर्मम और ज़बर्दस्त। कभी मुस्कुराते हैं तो कभी दुख से कराहते हैं। इन दृश्यों को निहारता हूं, तो मुझे लगता है यह एक सपना है।'

एवरेस्ट ऊपर से तो वार झेल ही रहा है, जड़ों से भी इसे खोखला करने की तैयारी चल रही है। चीन की योजना इसके नीचे नेपाल तक सुरंग बनाने की है। सब कुछ ठीक ठाक रहा तो अगले साल सुरंग बनाने का काम शुरू कर दिया जाएगा। यह दुनिया की सबसे बड़ी सुरंग होगी। चीन का कहना है कि 2020 तक इसे पूरा कर लिया जाएगा।

नेपाल में आए भूकंप ने तबाही ही नहीं मचाई बल्कि पूरे हिमालय का भूगोल बदलकर रख दिया। वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि माउंट एवरेस्ट की चोटी भी कांपने से बची नहीं रह पाई। यहां तक कि इसकी ऊंचाई घट गई है। दो सेंटीमीटर वार्षिक रफ्तार से ऊंचा उठ रहे माउंट एवरेस्ट की ऊंचाई भूकंप के बाद ढाई सेंटीमीटर तक कम हो गई।

2014 में 18 अप्रैल को एवरेस्ट की राह में पड़ने वाले खुंबु हिमप्रपात के नज़दीक हिमस्खलन से 16 शेरपा मारे गए थे। बहुत-से घायल भी हुए। इसके बाद शेरपाओं ने हड़ताल कर दी। नेपाल सरकार को प्रतिदिन लाखों का नुकसान हुआ। कई अभियान रद्द करने पड़े। कुल मिलाकर स्थिति ऐसी बन गई है कि 2014 को हिमालय का काला वर्ष कहा गया। अब 2015 की जो हालत है, उसे भी कम बुरा नहीं कहा जा सकता। एक तरफ एवरेस्ट चढ़ाई के अभियान थम-से गए हैं। दूसरी ओर हिमालय के इस इलाके में उथल-पुथल का अंदेशा बरकरार है।

उपग्रह डाटा विश्लेषण से यह साफ हुआ है कि काठमांडू की घाटी का इलाका ऊपर उठा है। भूवैज्ञानिक क्रिश्चियन मिनेट ने सेटेलाइट आंकड़ों का अध्ययन कर बताया है कि घाटी की ऊंचाई में 80 से.मी. तक का इज़ाफा हुआ है। ऐसा भारतीय टेक्टोनिक प्लेट के तिब्बती प्लेट की ओर

बढ़ने के कारण हुआ। मिनेट ने बताया कि भूकंप के पहले और बाद में काठमांडू और आसपास की तस्वीरों के संकलन से पता चला है कि यह क्षेत्र अब सेटेलाइट के नज़दीक है जिसका मतलब है कि इसकी ऊंचाई बढ़ गई है। जीपीआरएस सर्वे से पता चला कि काठमांडू घाटी की ऊंचाई भूकंप से पहले 1338 मीटर थी जो थोड़ी और ऊंची हो गई है। लीड्स युनिवर्सिटी के भूगर्भ वैज्ञानिक टिम राइट के मुताबिक भूकंप के बाद 120 कि.मी. लंबा और 50 कि.मी. चौड़ा इलाका तकरीबन तीन फीट ऊपर उठा।

नेपाल में आई प्राकृतिक विपदा के बाद इसकी ऊंचाई कितनी कम हो गई, इसके बारे में वैज्ञानिकों की राय है - करीब एक इंच। यह निष्कर्ष युरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के एक भू-उपग्रह सेंटीनल 1ए से मिली जानकारी के आधार पर निकाला गया। 29 अप्रैल को यह उपग्रह एवरेस्ट के ऊपर से गुज़रा था। हालांकि पर्यावरण रक्षा विशेषज्ञ प्रोफेसर रोजर विलहैम का कहना है कि एवरेस्ट की ऊंचाई में मात्र 1-2 मिलीमीटर का अंतर आया है जबकि अन्नपूर्णा पर्वतमाला की ऊंचाई 20 सेंटीमीटर बढ़ गई है। हाल ही में एवरेस्ट और पास के नेशनल पार्क में किए गए सर्वे से पता चला है कि एवरेस्ट का पूरा इलाका धीरे-धीरे गर्म हो रहा है।

पिछले पांच दशक से ग्लेशियर के पिघलने का सिलसिला जारी है। अब तक कई छोटे ग्लेशियरों का वजूद मिट चुका है। शोध से पता चला है कि एवरेस्ट की हिमरेखा 180 सेंटीमीटर तक ऊपर खिसक गई है। चिंतनीय पहलू यह है कि बर्फ के रंग में भी बदलाव हो रहा है। स्नो एंड एवलांश स्टडी एस्टेब्लिशमेंट का अध्ययन बताता है कि कहीं बर्फ बैंगनी दिख रही है तो कहीं हरी। इसके कारण ग्लोबल वार्मिंग और प्रदूषण दोनों हैं।

अब कम ही लोग बचे हैं जो एवरेस्ट की चढ़ाई समर्पण और खेल भावना से करते हैं। एवरेस्ट अब रोमांच तलाश करने वालों की भी ज़मीन बन गई है। पर्वतारोही अपना पूरा कंफर्ट ज़ोन साथ लेकर चलते हैं और ऐसा लगता है एवरेस्ट तफरीह करने आए हज़ार से अधिक लोग एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचे हैं। इससे वहां अब इतना कचरा फैल चुका है कि पर्यावरणविद उसे खतरनाक करार दे रहे हैं।

इसलिए पर्वतारोहियों और शेरपाओं का सम्बंध भी बिगड़ा है। पहले यह सम्बंध आत्मीय था लेकिन अब विशुद्ध व्यावसायिक है। एडमंड हिलेरी अपने साथ एवरेस्ट पहुंचे तेनजिंग शेरपा का बेहद सम्मान करते थे, लेकिन आज स्थिति वैसी नहीं है। पिछले साल साढ़े सात हज़ार फीट की ऊंचाई पर पर्वतारोहियों और शेरपाओं में हाथापाई की नौबत तक आ गई थी। शेरपा अपने साथ नौकर की तरह व्यवहार करने और हिमालय पर बेहद कचरा फैलाए जाने से नाराज़ थे। कचरे में वैसी कई चीज़ें थी जिसे एवरेस्ट पर लाए जाने की ज़रूरत नहीं थी। इस बार जब भूकंप आया, एवरेस्ट के निचले आधार शिविर में कई ऐसे लोग भी मौजूद थे जो वहां हनीमून मनाने पहुंचे थे। ब्रिटेन की एलेक्स चैप्पेटे और उनके पति सैम स्नाइडर ने भूकंप के दौरान का आंखों देखा हाल अपने ब्लॉग पर भी लिखा।

दुनिया के सर्वोच्च शिखर पर जाना और उसे जीना हर कोई चाहता है, लेकिन बाज़ार ने यहां पहुंचने के मायने ही बदल दिए हैं। एवरेस्ट इतना आम हो गया है कि उस पर पहुंचने का असली रोमांच और आनंद ही खत्म हो गया है। हर साल संख्या के नए रिकॉर्ड बन रहे हैं, साहस के नहीं। होना यह चाहिए कि जिसमें साहस, जोश और जोखिम उठाने का दमखम हो वही एवरेस्ट पर पहुंचे।

संतोष यादव दो बार एवरेस्ट चढ़ चुकी हैं। वे कहती हैं कि एवरेस्ट विजेता बनने की चाहत रखने वाले युवक-युवतियों को नेपाल की कंपनियां लूट रही हैं। कंपनियां मोटी रकम वसूलती हैं और शॉर्टकट रास्ते से एवरेस्ट पर पहुंचा देती हैं। संतोष कहती हैं कि ऐसा नहीं है कि पिछले 10-12 सालों में सारे एवरेस्ट विजेता चढ़ाई के मापदंडों पर खरा नहीं उतरे लेकिन ज़्यादातर के साथ नेपाली कंपनियों ने धोखा किया। वे कहती हैं कि चढ़ाई के लिए पहले बकायदा तीन महीने का प्रशिक्षण दिया जाता था। अब इसकी जगह टीम के साथ अलग से एक टीम भेजी जाती है जो रास्ता खोलने के साथ-साथ ऑक्सीजन से लेकर सभी खाने-पीने के सामान का भार उठाती है।

कमाई में ज़्यादा बड़ा रोल तो ट्रेवल एजेंसियों का होता है लेकिन इसके पीछे नेपाल की सरकार भी है। गौरतलब है

कि नेपाल ही नहीं, कई देशों की सरकारें अपने युवाओं को बेवकूफ बना मोटी कमाई कर रही हैं। 2013 में तो हद हो गई। नेपाल सरकार ने 30 दलों के 335 सदस्यों को एवरेस्ट पर चढ़ने की अनुमति दी। सिर्फ इन्हें परमिट देने के नाम पर नेपाल सरकार को 25 करोड़ 40 लाख रुपए मिले। एक पर्वतारोही को आज चढ़ाई के लिए 75 से 80 लाख खर्च करने होते हैं। इस खेल को लेकर अब हमारा खेल मंत्रालय सचेत हो गया है। इंडियन माउंटेन फाउंडेशन अब आवेदनों को गहराई से जांचता है। मंत्रालय ने तय किया है कि एवरेस्ट के नाम पर कोई अवार्ड नहीं मिलेगा।

कभी अजेय मानी जाने वाली एवरेस्ट की चोटी आज कुचली हुई नज़र आती है। कारण, यहां आने वाले लोगों की बढ़ती तादाद है। अप्रैल-मई के महीने में एवरेस्ट का रास्ता एक ट्रेवल ट्रैक की तरह काम करता है। 2012 में तो एक ही दिन 234 पर्वतारोही चोटी पर पहुंचे। चढ़ाई में मदद करने वाले उपकरणों में सुधार और शेरपाओं की अथक कोशिशों के कारण चढ़ाई आसान हो गई है। *नेशनल जियोग्राफिक* चैनल के अनुसार 1990 में चोटी पर पहुंचने की 18 प्रतिशत कोशिशें कामयाब हुईं थीं जबकि 2012 में यह आंकड़ा 56 प्रतिशत तक पहुंच गया। जर्मन पर्वतारोही राल्फ यूमोविट्स ने 2013 में चढ़ाई के दौरान एक शानदार तस्वीर खींची। इस तस्वीर में 100 से ज़्यादा लोग कतार में खड़े एवरेस्ट पर चढ़ने की अपनी बारी का इंतज़ार करते हुए दिख रहे हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***

शैक्षणिक संदर्भ

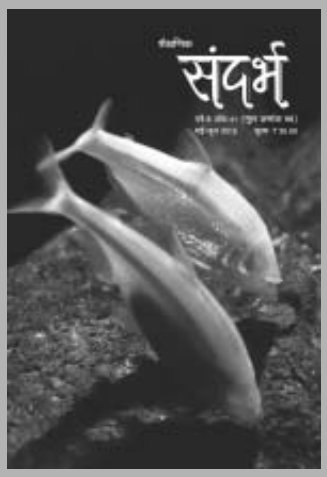

विज्ञान और शिक्षा से सम्बन्धित विविध मुद्दों और विषयों पर परत दर परत खुली चर्चा करती एक बेबाक पत्रिका

संदर्भ का 100वां अंक जल्द प्रकाशित होने वाला है, अपनी प्रति आज ही बुक कराएं।

• विज्ञान • विज्ञान शिक्षण • बच्चों और शिक्षकों के साथ अनुभव • कहानी
• शिक्षा शास्त्र एवं शिक्षण विधि • पुस्तक अंश / पुस्तक समीक्षा • भाषा शिक्षण

वार्षिक सदस्यता शुल्क
व्यक्तिगत - 150 रुपए
संस्थागत - 300 रुपए
एक अंक की कीमत - 30 रुपए, कुल पृष्ठ- 92

सदस्यता शुल्क एकलव्य, भोपाल के नाम ड्राफ्ट या मनीऑर्डर या मल्टीसिटी चेक से भेजें।